॥ नरसिंहस्तोत्र (नारायण पण्डित) ॥

.. narasiMha stotra (nArAyaNa paNDita) ..

sanskritdocuments.org

July 25, 2016

Document Information

Text title : narasiMha stotra (nArAyaNa paNDita)
File name : narasimha.itx
Location : doc_vishhnu
Language : Sanskrit
Subject : philosophy/hinduism/religion
Transliterated by : H. P. Raghunandan Shrisha Rao shrao at dvaita.org March 18, 1996
Proofread by : H. P. Raghunandan Shrisha Rao shrao at dvaita.org March 18, 1996
Latest update : November 1, 2010
Send corrections to : Sanskrit@cheerful.com
Site access : http://sanskritdocuments.org

॥ नरसिंहस्तोत्र (नारायण पण्डित) ॥

उदयरवि सहस्रद्योतितं रूक्षवीक्षं प्रळय जलधिनादं कल्पकृद्वह्नि वक्रम् ।
सुरपतिरिपु वक्षश्छेद रक्तोक्षिताङ्गं प्रणतभयहरं तं नारसिंहं नमामि ॥

प्रळयरवि कराळाकार रुक्चक्रवालं विरळय दुरुरोची रोचिताशांतराल ।
प्रतिभयतम कोपात्त्युत्कटोच्चाट्टहासिन् दह दह नरसिंहासह्यवीर्याहितंमे ॥ १॥

सरस रभसपादा पातभाराभिराव प्रचकितचल सप्तद्वन्द्व लोकस्तुतस्त्त्वम् ।
रिपुरुधिर निषेकेणैव शोणाङ्घ्रिशालिन् दह दह नरसिंहासह्यवीर्याहितंमे ॥ २॥

तव घनघनघोषो घोरमाघ्राय जङ्घा परिघ मलघु मूरु व्याजतेजो गिरिञ्च ।
घनविघटतमागाद्दैत्य जङ्घालसङ्घो दह दह नरसिंहासह्यवीर्याहितंमे ॥ ३॥

कटकि कटकराजद्धाट्ट काग्र्यस्थलाभा प्रकट पट तटित्ते सत्कटिस्थातिपट्वी ।
कटुक कटुक दुष्टाटोप दृष्टिप्रमुष्टौ दह दह नरसिंहासह्यवीर्याहितंमे ॥ ४॥

प्रखर नखर वज्रोत्खात रोक्षारिवक्षः शिखरि शिखर रक्त्यराक्तसंदोह देह ।
सुवलिभ शुभ कुक्षे भद्र गंभीरनाभे दह दह नरसिंहासह्यवीर्याहितंमे ॥ ५॥

स्फुरयति तव साक्षात्सैव नक्षत्रमाला क्षपित दितिज वक्षो व्याप्तनक्षत्रमार्गम् ।
अरिदरधर जान्वासक्त हस्तद्वयाहो दह दह नरसिंहासह्यवीर्याहितंमे ॥ ६॥

कटुविकट सटौघोद्घट्टनाद्भ्रष्टभूयो घनपटल विशालाकाश लब्धावकाशम् ।
करपरिघ विमर्द प्रोद्यमं ध्यायतस्ते दह दह नरसिंहासह्यवीर्याहितंमे ॥ ७॥

हठलुठ दल घिष्टोत्कण्ठदष्टोष्ठ विद्युत् सटशठ कठिनोरः पीठभित्सुष्ठुनिष्ठाम् ।
पठतिनुतव कण्ठाधिष्ठ घोरांत्रमाला दह दह नरसिंहासह्यवीर्याहितंमे ॥ ८॥

हृत बहुमिहि राभासह्यसंहाररंहो हुतवह बहुहेति ह्रेपिकानंत हेति ।
अहित विहित मोहं संवहन् सैंहमास्यम् दह दह नरसिंहासह्यवीर्याहितंमे ॥ ९॥

गुरुगुरुगिरिराजत्कंदरांतर्गतेव दिनमणि मणिशृङ्गे वंतवह्निप्रदीप्ते ।
दधदति कटुदंष्ट्रे भीषणोज्जिह्व वक्रे दह दह नरसिंहासह्यवीर्याहितंमे ॥ १०॥

अधरित विबुधाब्धि ध्यानधैर्यं विदीध्य द्विविध विबुधधी श्रद्धापितेंद्रारिनाशम् ।
विदधदति कटाहोद्घट्टनेद्धाट्टहासं दह दह नरसिंहासह्यवीर्याहितंमे ॥ ११॥

त्रिभुवन तृणमात्र त्राण तृष्णंतु नेत्र त्रयमति लघितार्चिर्विष्ट पाविष्टपादम् ।
नवतर रवि ताम्रं धारयन् रूक्षवीक्षं दह दह नरसिंहासह्यवीर्याहितंमे ॥ १२॥

भ्रमद भिभव भूभृद्भूरिभूभारसद्भिद् भिदनभिनव विदभ्रू विभ्र मादभ्र शुभ्र ।
ऋभुभव भय भेत्तर्भासि भो भो विभाभिर्दह दह नरसिंहासह्यवीर्याहितंमे ॥ १३॥

श्रवण खचित चञ्चत्कुण्ड लोच्चण्डगण्ड भ्रुकुटि कटुललाट श्रेष्ठनासारुणोष्ठ ।
वरद् सुरद् राजत्केसरोत्सारि तारे दह दह नरसिंहासह्यवीर्याहितंमे ॥ १४॥

प्रविकच कचराजद्रत्न कोटीरशालिन् गलगत गलदुस्रोदार रत्नाङ्गदाढ्य ।
कनक कटक काञ्ची शिञ्जिनी मुद्रिकावन् दह दह नरसिंहासह्यवीर्याहितंमे ॥
१५॥

अरिदरमसि खेटौ बाणचापे गदां सन्मुसलमपि दधानः पाशवर्यांकुशौ च ।
करयुगल धृतान्त्रस्रग्विभिन्नारिवक्षो दह दह नरसिंहासह्यवीर्याहितंमे ॥ १६॥

चट चट चट दूरं मोहय भ्रामयारिन् कडि कडि कडि कायं ज्वारय स्फोटयस्व ।
जहि जहि जहि वेगं शात्रवं सानुबंधं दह दह नरसिंहासह्यवीर्याहितंमे ॥ १७॥

विधिभव विबुधेश भ्रामकाग्नि स्फुलिङ्ग प्रसवि विकट दंष्ट्रोज्जिह्ववक्त्र त्रिनेत्र ।
कल कल कलकामं पाहिमां तेसुभक्तं दह दह नरसिंहासह्यवीर्याहितंमे ॥ १८॥

कुरु कुरु करुणां तां साङ्कुरां दैत्यपूते दिश दिश विशदांमे शाश्वतीं देवदृष्टिम् ।
जय जय जय मुर्तेऽनार्त जेतव्य पक्षं दह दह नरसिंहासह्यवीर्याहितंमे ॥ १९॥

स्तुतिरिहमहितघ्नी सेवितानारसिंही तनुरिवपरिशांता मालिनी साऽभितोऽलम् ।
तदखिल गुरुमाग्र्य श्रीधरूपालसद्भिः सुनिय मनय कृत्यैः सद्गुणैर्नित्ययुक्ताः ॥
२०॥

लिकुच तिलकसूनुः सद्धितार्थानुसारी नरहरि नुतिमेतां शत्रुसंहार हेतुम् ।
अकृत सकल पापध्वंसिनीं यः पठेत्तां व्रजति नृहरिलोकं कामलोभाद्यसक्तः ॥
२१॥

इति कविकुलतिलक श्री त्रिविक्रमपण्डिताचार्यसुत
नारायणपण्डिताचार्य विरचितम् श्री नरसिंह स्तुतिः संपूर्णम्
॥ भारतीरमणमुख्यप्राणांतर्गत श्री कृष्णार्पणमस्तु ॥

Encoded and proofread by
H. P. Raghunandan hpraghu at genius.tisl.soft.net Shrisha Rao

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted for promotion of any website or individuals or for commercial purpose without permission.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

.. narasiMha stotra (nArAyaNa paNDita) ..
was typeset on July 25, 2016

Please send corrections to *sanskrit@cheerful.com*